अज्झल्समुदायत्व (ajjhalsamudāya-tva) *n.* the state of being a group of vowels and consonants उत्तरपदस्याज्झल्समुदायत्वात्तल्लोपस्थानजादेशत्वात् Pradī. iv. 401A (*on* v. 3. 84); vii. 145 (*on* viii. 2. 88)

अज्झल्साधारण (ajjhal-sādhāraṇa) *adj.* common to vowels and consonants स्वरितत्वम् ··· अज्झल्साधारणम् ··· अविक्रियमाणपदघटकाज्झिंह वा LaS'abdeS'e. i. 65. 1.

अज्झि (aj-jhi) *adj.* (Gr.) (stem) after which the suffix *jhi* undergoes the change *at* (i. e. is reduplicated) नाज्झेः शतुः CāndraVyā. v. 4. 32; अज्झेश्शतुः S'ākaṭāVyā. i. 2. 14; i. 4. 107; iv. 2. 47.

अज्झितदेवी (ajjhita-devī) *f.* name of the queen of king Vyāghra and mother of king Jayanātha महाराजव्याघ्रः । तस्य पुत्रस्तत्पादानुध्यातो महादेव्यामज्झितदेव्यामुत्पन्नो महाराजजयनाथः EI. xix. 129. 5.

अज्झितभट्टारिका (ajjhita-bhaṭṭārikā) *f.* name of the queen (of Narendrasena) नरेन्द्रसेनस्य सूनोः कुन्तलाधिपतिसुतायां[मृ] महादेव्यामज्झितभट्टारिकायामुत्पन्नस्य ··· महाराजश्रीपृथिवीषेणस्य EI. ix. 271. 31.

अज्झुल (ajjhula) *m.* burning coal, live coal अङ्गारः कोकिलाज्झुलौ TrikāS'e. i. 1. 69.

अज्ञ (a-jña) *adj.* [*f.* -ā] [DEBRU. p. 77] **1** not knowing, not knowing (what should be known), not knowing (the highest self or the real state of affairs), not versed (in a particular branch of knowledge), not proficient, inexperienced, having one-sided view, totally ignorant, knowing a little, not taught (the Mantras) ऋचां मूर्धानम् ··· अथर्वणां मुण्डमुण्डम् । नाधीतेऽधीते वेदमाहुस्तमज्ञम् S'āṅkhāĀ. 14. 1 (47. 16); ज्ञाज्ञौ द्वावजावीशनीशौ S'vetāU. 1. 9; अज्ञो जन्तुरनीशोऽयमात्मनः सुखदुःखयोः MahāBhā. iii. 31. 27; न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् MahāBhā. vi. 25. 26; क्षेत्रज्ञो विशरीरश्च ज्ञो वा स्यादज्ञ एव वा BuddhaC. 12. 80; अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः । अज्ञं हि बालमित्याहुः ManuSm. 2. 153; 4. 194; किमज्ञो ज्ञः स नित्यः किम् (पुरुषः) CaraS. iv. 1. 4 (1941 Ed.); विक्लो वा भवत्यज्ञैरुपक्रान्त इवातुरः BhelaS. 15. 10 (1. 9); 19. 2 (1. 17); अज्ञं कर्माणि लिम्पन्ति तज्ज्ञं कर्म न लिम्पति S'atTrayī. 358; 360; किं ज्ञश्चाज्ञश्च सर्वो वाचयितव्यः SābaBh. 1121. 3 (*on* iii. 8. 18); अज्ञा गुणैः प्रवर्तन्ते रजःसत्त्वतमोऽभिधैः BrahmāṇḍP. iii. 4. 23; यथा चाज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रोऽनृचोऽफलः ParāSm. 8. 18; BṛParāSm. 2. 49; ज्ञे च ज्ञातरि वेदार्थविदि अज्ञे च कृताकिंकादौ ··· विशेषानभिज्ञः BālaKrī. ii. 57. 13 (*on* 3. 143–145 (? 153–155)); तदज्ञेन पश्चाद्व्यवस्थाप्यते । विकारदर्शिनेनेव विषमज्ञैः PramāVāSvopVṛ. 66. 14; आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च S'iśuVa. 2. 79; Kāvyālaṅ.(Bh.) 1. 3; अज्ञो वा यदि वा विपर्ययगतः ··· यस्तस्य गोप्ता गुरुः MahāviC. 3. 35; वृद्धेभ्यो न च तद्बोधस्तेऽपि ह्यज्ञाः स्वतः स्थिताः TattvSaṁ. 2773; NyāyVi. 2. 67; यच्च अज्ञैरलसतया अकर्तृत्वाभ्युपगमः ChāndoUBh. 128. 16 (*on* ii. 23. 1); अथ एवमज्ञः सन् ··· अनुशिष्टोऽसीति अवोचथाः ChāndoUBh. 278. 6 (*on* v. 3. 4); S'vetāUBh. 102. 2 (*on* 1. 2); यस्तु अज्ञः देही देहेन्द्रियसंघातमात्रात्मदर्शी GītāBh.(S'aṅ.) 165. 1 (*on* 5. 13); कुम्भकः प्राणसंयमः । अयं चापि प्रबुद्धानामज्ञानां प्राणपीडनम् AparoAnu. 120; स्थाणुं संभावयत्यज्ञो न तु दृष्टं तमो विना BṛĀraUBhVā. (Sambandha.) 116; 234; 283; 1026; उक्तं ब्रह्मविदाप्नोति परं नाज्ञोऽसदाश्रयः TaiUBhāVā. 114. 4(2); IṣṭaSi. 71. 22; अज्ञोऽहमित्यवगतिर्न परस्य पुंसः SaṁkṣeS'ā. 2. 178 (ii. 108. 18); ParāTri. 279. 3; भवति च चतुष्प्रकारः पुरुषः अज्ञः संदिग्धो विपर्यस्तो निश्चितमतिश्चेति । ··· अमुना शास्त्रेणाज्ञस्य ज्ञानमुपजनयति NyāyMañ. i. 5. 16; अथवा अज्ञा अनात्मज्ञाः शास्त्रानवगतात्मतत्त्वाः ManuBh. i. 527. 15 (*on* 6. 84); KulārT. 2. 111; आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः Hitopa. 3. 118; अज्ञस्य जन्तोः पलिताङ्करेक्षणं भवेन्मनोभङ्गकृते न धीमतः YaśasCam. i. 255. 5; ii. 139. 1; SubhāRaSaṁ. 16; जागर्त्यपि स्वपन्नज्ञः स्वप्ने जागरणं यथा BhāgP. xi. 13. 30; i. 3. 37; i. 8. 19; AgniP. 346. 2; अज्ञा जानन्ति विश्वेशं पाषाणादिषु सर्वतः BṛNāraP. 2. 48; 7. 77; भोगाभ्यासजडेनाज्ञो मुग्धस्य मनसा यथा YogVā. iii. 106. 8; ii. 19. 15; Bhām. 75. 2 (*on* i. 1. 3); अज्ञानामेकमार्गदृश्वनां चासंशयाद् बहुविदां वाक्यार्थनिर्णये संशयाच्च मतिरुपजायते Kāśi. i. 58. 17 (*on* 1. 128); NyāyRa. 44. 8 (*on* 1. 127); LakṣmīT. 24. 51; Suvṛti. 2. 24; SaraKanṭhā. 393. 21; परमपुरुषोऽप्यज्ञ इति पक्षे GītāBh.(Rā.) 63. 3 (*on* 2. 12); अज्ञ एवमुपदेशलब्धज्ञानरहितः GītāBh.(Rā.) 282. 9 (*on* 4. 40); मधुद्विषं राधा । अज्ञेव पृच्छति कथां शंभोर्दयितार्धतुष्टस्य ĀryāSaS'a. 508; ब्रह्मैवाज्ञमुपाधिसंबद्धं चेति सर्वश्रुतिस्मृतिन्यायविरोधोऽन्येषाम् VedāntSā.(Rā.) 22. 1 (*on* i. 1. 2); VedāntDī. 30. 9 (*on* i. 2. 3); किं जीवः परमात्मनोऽत्यन्तभिन्नः उत परमात्मैवाज्ञः VedāntDī. 128. 13 (*on* ii. 3. 42); VedāSaṁ. 73. 3; 75. 7; Kiraṇā. 95. 15; DevīBhāP. iii. 26. 40; vii. 17. 11; PadmP. ii. 67. 26; ĀdiP. 5. 10; आचक्षते तयोर्भेदमज्ञा न परमार्थतः SaurP. 2. 17; 3. 3; AdhyāRā. i. 5. 57; iii. 7. 19; सहस्व मे तदज्ञस्य निह्नुते दोषमज्ञता TriṣaS'aPuC. i. 4. 184; BrahmSūBh.(Ma.) 4B. 2 (*on* i. 1. 4); AnuVyā. 17A. 1 (*on* 2. 1); TattvPradī.(Ci.) 10. 10; PārśvC. 2. 700; PrabhāC. 164. 29; S'rutaPra. iA. 246. 25 (*on* i. 1. 1); अज्ञानां ध्यानोचितज्ञानशून्यानाम् ManvaVi. 745. 9 (*on* 6. 84); न त्वज्ञानां वेदहेत्वादिज्ञानशून्यानाम् ManvaVi. 1534. 10 (*on* 12. 113); अज्ञेभ्योऽत्यन्ताज्ञेभ्यः ManvaVi. 1528. 1 (*on* 12. 103); SūktiRa. 35. 34; S'aṅkaVi.(Ā.) 13. 12; S'atDū. 53. 9; वस्त्राभासस्थितान् वर्णान् यद्वदाधारवस्त्रगान् । वदन्त्यज्ञाः PañcDa. 6. 8; NyāyMāVi. 209. 7 (*on* iii. 8. 9); TattvPrakā. 142B. 10 (*on* iii. 1. 13); अज्ञो विप्रतिपन्नः संदिग्धो ना शास्त्रे अधिकारी स्यात् NyāySu.(Ja.) 64B. 12 (*on* i. 1. 1); VedāntPāSau. 113. 8 (*on* i. 3. 43); VedāntKau. 235. 25 (*on* ii. 3. 42); 386. 24 (*on* iv. 1. 3); BrahmSūBh.(S'rī.) ii. 141. 6 (*on* ii. 3. 19); अहमज्ञ इत्याद्यनुभवाच्च अज्ञानमात्मेति वदतः VedāntSā.(Sa.) 19. 8; SarvaDaKau. 125. 7; ईषद्ध्ययना अज्ञाः ManvaMu. 521. 9 (*on* 12. 103); साधयति यत्प्रयोजनमज्ञस्तत् तस्य काकतालीयम् Subhāṣi. 401; अज्ञोऽपि तज्ज्ञतामेति शनैः शैलोऽपि चूर्ण्यते Subhāṣi. 2679; 3523; कश्चित्तु व्याचष्टे शून्यं तत्त्वमित्यज्ञानां कुत्सितवादमात्रं न पुनरत्र युक्तिरस्ति SāṁkhyaPraBh. 22. 1 (*on* 1. 45); 27. 24 (*on* 1. 57); भक्तिरसस्य प्रस्तुतिः ··· अज्ञेनापि मयास्य क्रियते BhaktiRaSi. i. 1. 6 (but comm. दैन्येऽपि न विद्यते ज्ञो यस्मात्तेनेति ज्ञेयम्); StavMā. 88. 12; CaitaCa. 102. 20(4); ज्ञाज्ञौ सर्वज्ञकिञ्चिज्ज्ञौ S'ivārkaMaDī. i. 124. 21 (*on* i. 1. 2); SiddhāTa. 4. 26; अज्ञ एव वाजपेयादावधिकारी BhāṭṭDī. ii. 69. 6 (*on* iii. 8. 8); VīraMi.(Bhakti.) 54. 20; कामं यन्मौलिरज्ञानां कम्पते कविसूक्तिषु Gaṅgāva. 1. 25; 8. 94; सर्वमद्भुतमज्ञानां जानतां तु न किंचन SabhāS'. 10; SiddhāTaVi. 30. 19; सुखेन चिकित्सितुं शक्यः (*on* अज्ञश्चाश्रद्धानश्च) Nīlakaṇṭha on MahāBhā. vi. 28. 4 (Bombay Ed.); SarvaMaSaṁ. 11. 10; Ḍamaru. 13(6); LalitāSaBh. 161. 11 (*on* 202); Bhāsk. i. 18. 20 (*on* i. 1. 1); GoviBh. 17. 7 (*on* i. 1. 12); VedāntSiSūMañ. 1. 73; **2** foolish, stupid, unwise, not careful, not exercising judgement, silly, childish न जानीषे पुरा त्वं तु (v. l. अज्ञोऽसि त्वं पुरा मूढ) MahāBhā. vii. 98. 5; आत्मोदरकृतेऽथाज्ञः करोति विघसं बहु MahāBhā. xii. 24*; कामार्थमज्ञः कृपणं करोति BuddhaC. 11. 34; सशेषमातुरं कुर्यात्त्वज्ञमतमौषधम् CaraS. i. 1. 126 (1922 Ed.); i. 9. 13 (1922 Ed.); i. 11. 51 (1922 Ed.); तदेवाचमज्ञेन सेव्यमानममात्रया···कुरुते मदम् SuśruS. vi. 47. 9; AtriS. 144; यदाढ्याना(v. l. यदज्ञाना)मग्ने द्रविणमदनिःसंज्ञमनसाम् S'atTrayī. 168; अज्ञः सुखमाराध्यः S'atTrayī. 8; Hitopa. 4. 104; SūktiMu. 29. 23; S'ārṅgaPa. 208; Subhāṣi. 393; एरण्डभिण्डार्कनलैः ··· दारुकृत्यं यथा नास्ति तथा नाज्ञैः प्रयोजनम् Tantrākhyā. 10. 18; PañcT. 1. 48 (32. 8); Mṛccha. 1. 55 (14); Bṛhajjā. 18. 3; यश्चाज्ञः तस्य किं प्रतिपादयितव्यम् NyāyVār. 109. 13 (*on* i. 1. 31); तत्र कश्चिद् द्विष्टाज्ञधूर्तानामन्यतमः स्यादपीत्यनाश्वासः PramāVāSvopVṛ. 113. 24; मया पुनरेभ्य एवाभिद्रुग्धमज्ञेन UttaRāC. 6. 13(2); अज्ञानाम् अविवेकिनाम् GītāBh.(S'aṅ.) 97. 17 (*on* 3. 26); अविचारितरमणीयं सर्वमुदुम्बरफलोपमं भोग्यम् । अज्ञानामुपभोग्यम् SarvaVeSāSaṁ. 42; विद्धयति गुरुपक्षोत्सेकमज्ञा जलानाम् (मत्स्याः) HarVi. 41. 40; SaṁkṣeS'ā. 1. 268 (i. 205. 2); ManuBh. i. 154. 5 (*on* 2. 153); ii. 483. 25 (*on* 12. 102); वानरानुपदिश्याज्ञान्स्थानभ्रंशं ययुः खगाः Hitopa. 3. 5; छन्नकामसुखार्थाज्ञस्वतन्त्राहंयुषण्डकान् । रक्तेव रञ्जयेत DaśRū. 2. 22; मूढामज्ञाम् JayaMa. 285. 23 (*on* 5. 4); तद्वानृण्यमुपैम्यज्ञ मित्राणां मित्रवत्सलः BhāgP. x. 78. 6 (but comm. S'rīdhara न विद्यते ज्ञो यस्मात्); iii. 3. 4; iii. 18. 3; मया ज्ञातं शंकराय सुतां दातुं त्वमिच्छसि । ···अज्ञायानाथायाबन्धवे BrahmVaiP. iv. 41. 22; BṛNāraP. 4. 12; अज्ञो जनस्त्यजति लब्धमपीह रत्नं काचेन तुल्यमिति DharmoPra. 257. 25; कालः कलिर्जगदिदं न कृतज्ञमज्ञे SaraKanṭhā. 437. 14 = Kuval. 90(22); स्वपन्त्यज्ञा हि निश्चेष्टाः कुतो निद्रा विवेकिनाम् KathāSaSāg. vi. 6. 60; SaurP. 48. 4; DevīBhāP. i. 11. 52; NāraS. 15. 12; NaiṣC. 3. 64; जानन्ति नैवं हृदये स्थितं वै चामीकरं कण्ठगतं यथाज्ञाः AdhyāRā. i. 1. 21; VasiS. 16. 12; SaduktiKa. 307. 17; बालग्रहणमुपनीतादेरप्यज्ञस्य निवृत्त्यर्थम् । अज्ञेऽपि बालशब्दप्रयोगदर्शनात् CaturCin. iii(1). 1486. 12; RasāSu. 29. 11 (1. 114); RājNiRa. 46. 17; नृपसमितावज्ञेन स्वोरुस्तेनाहतः (दुर्योधनेन) YudhiVi. 4. 17; बालिशोऽज्ञः ManvaMu. 122. 12 (*on* 3. 176); अज्ञो न वितरत्यर्थान् पुनर्दारिद्र्यशङ्कया Subhāṣi. 2977; वनिता नितान्तमज्ञा स्वाज्ञामुल्लङ्घ्य वर्तते यदि सा PraboSu. 34; हारं वक्षसि केनापि दत्तमज्ञेन मर्कटः । लेढि जिघ्रति RasGaṅ. 542. 6; 457. 5; SiddhāTaVi. 92. 24; अज्ञस्त्वं प्रतिपक्षराक्षसमुखे मोहात् पदं मा कृथाः MahāN. 6. 109; **3** without consciousness, insentient, incapable of attaining any knowledge, lacking knowledge वत्सविवृद्धिनिमित्तं क्षीरस्य यथा प्रवृत्तिरज्ञस्य SāṁkhyaKā. 57; एवं पुरुषविमोक्षनिमित्तं प्रधानस्याज्ञस्य प्रवृत्तिः MāṭhVṛ. 73. 15 (*on* 57); अज्ञातमज्ञं वा शून्यं जडं वा यच्चविद्या IṣṭaSi. 205. 4; सेयं बुद्धिरज्ञा सांख्यैः कल्पिता NyāyMañ. ii. 61. 20; यच्चैवमज्ञं मनः Kiraṇā. 157. 5; न हि शकुनिसूत्रयोः ··· अज्ञप्राणादि-